नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

वैश्विक कृषि व्यवस्था में बदलाव की पहल

इंदौर में आयोजित ब्रिक्स कृषि मंत्रियों की बैठक केवल एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन भर नहीं थी, बल्कि यह वैश्विक कृषि व्यवस्था के भविष्य को लेकर एक महत्वपूर्ण मंथन साबित हुई. बैठक के समापन पर अपनाया गया 'इंदौर डिक्लेरेशन' इस बात का प्रमाण है कि बदलते वैश्विक परिदृश्य में किसान और कृषि को विकास की हर नीति के केंद्र में रखना अब एक आवश्यकता बन चुका है. खाद्य सुरक्षा, जलवायु-सहनीय खेती, कृषि नवाचार, पोषण सुरक्षा और किसानों के सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर बनी सहमति ने दुनिया के सामने एक नई दिशा प्रस्तुत की है.

दरअसल, किसान केवल अन्नदाता नहीं, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा की सबसे मजबूत कड़ी हैं. आज जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, भू-राजनीतिक तनाव, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और बढ़ती जनसंख्या जैसी चुनौतियों का सामना कर रही है, तब कृषि क्षेत्र की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है. ऐसे समय में ब्रिक्स देशों का यह साझा संकल्प कि 'किसान मजबूत रहेगा तो दुनिया सुरक्षित रहेगी' अत्यंत प्रासंगिक और दूरदर्शी है.

ब्रिक्स समूह विश्व की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में इसकी महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है. ऐसे में कृषि क्षेत्र के लिए साझा रोडमैप तैयार होना केवल सदस्य देशों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व के लिए सकारात्मक संकेत है. इंदौर डिक्लेरेशन में टिकाऊ खेती, आधुनिक तकनीक के उपयोग, जल संरक्षण, प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित दोहन और कृषि अनुसंधान को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दिया गया है. यह स्वीकार किया गया है कि केवल उत्पादन बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं होगा, बल्कि उत्पादन को पर्यावरण के अनुकूल और भविष्य के लिए टिकाऊ बनाना भी उतना ही आवश्यक है.

आज रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के अंधाधुंध उपयोग से मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण दोनों प्रभावित हो रहे हैं. ऐसे में प्राकृतिक खेती, जैविक कृषि और जलवायु-सहनीय खेती की अवधारणाएं केवल विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता बनती जा रही हैं. इंदौर डिक्लेरेशन ने इन विषयों को वैश्विक विमर्श के केंद्र में लाकर एक महत्वपूर्ण पहल की है.

इस घोषणा-पत्र की एक और महत्वपूर्ण विशेषता कृषि क्षेत्र में युवाओं और महिलाओं की बढ़ती भागीदारी को प्रोत्साहित करना है. दुनिया भर में खेती को नई पीढ़ी के लिए आकर्षक और लाभकारी बनाना बड़ी चुनौती है. तकनीक आधारित कृषि, ड्रोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल प्लेटफॉर्म और स्मार्ट फार्मिंग जैसी अवधारणाएं युवाओं को कृषि से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं. वहीं महिलाओं की भागीदारी बढ़ाकर कृषि को अधिक समावेशी और उत्पादक बनाया जा सकता है.

भारत के लिए यह अवसर इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उसने वैश्विक मंच पर कृषि को केवल उत्पादन का विषय नहीं, बल्कि खाद्य सुरक्षा, पोषण, पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण विकास के व्यापक संदर्भ में प्रस्तुत किया है. इंदौर डिक्लेरेशन भारत की उस सोच को भी प्रतिबिंबित करता है जिसमें विकास का अंतिम लक्ष्य किसान और ग्रामीण समाज की समृद्धि है.

निस्संदेह, इंदौर से निकला यह संदेश दूरगामी प्रभाव छोड़ सकता है. यदि ब्रिक्स देश अपने संकल्पों को व्यवहार में उतारने में सफल रहते हैं तो यह न केवल करोड़ों किसानों के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएगा, बल्कि दुनिया को अधिक सुरक्षित, टिकाऊ और खाद्य-संपन्न भविष्य की दिशा भी प्रदान करेगा. किसान को केंद्र में रखने वाली यही सोच आने वाले समय की सबसे बड़ी वैश्विक आवश्यकता है.

छोटे कस्बों से वैश्विक विश्वविद्यालयों तक

सपनों की उड़ान भरने में मददगार छात्रवृत्तियां

श्री सुधांश पंत

भारत के गांवों और छोटे कस्बों से लेकर ऑक्सफोर्ड और जॉन हॉपकिंस विश्वविद्यालय के कॉरिडोर और हरे-भरे बगीचों तक, राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति योजना महाद्वीपों में उम्मीद के सफर को समर्थ बना रही है.

त्रिपुरा के एक सुदूर और पिछड़े गांव में पले-बढ़े दीपायन भौमिक ने अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा के अवसरों से दूर रहते हुए भी आर्किटेक्ट बनने का सपना देखा था. फिर भी, अपनी शैक्षिक लगन और राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति के सहयोग से दीपायन ने जर्मनी के स्टटगार्ट विश्वविद्यालय से आर्किटेक्चर और अर्बन डिजाइन में मास्टर ऑफ साइंस की उपाधि प्राप्त की.

जर्मनी में रहने, पढ़ाई और काम करने से उन्हें एक विविध अंतरराष्ट्रीय वातावरण का अनुभव मिला, जिसने न केवल उनकी अकादमिक समझ को बल्कि समाज, स्थायित्व और शहरी विकास के प्रति उनके नजरिये को भी बदल दिया. आर्किटेक्चर और अर्बन डिजाइन के लिए भारतीय और जर्मन दोनों पद्धतियों से प्रेरणा लेते हुए, वे अपने ज्ञान को उपयोग में लाने के दृढ़ संकल्प के साथ भारत लौटे. आज, दीपायन अपनी खुद की आर्किटेक्चर फर्म चलाते हैं, अपने पेशेवर कार्य के माध्यम से समाज में योगदान दे रहे हैं और साथ ही दूसरों के लिए अवसर भी पैदा कर रहे हैं.

> छात्रवृत्ति एक महत्वपूर्ण सहायता प्रणाली के रूप में कार्य करती है जो छात्रों को रोजमर्रा की चुनौतियों की चिंता करने के बजाय पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने में सक्षम बनाती है. यह छात्रवृत्ति बिना किसी प्रचार-प्रसार के संचालित होती है. इसमें न तो कोई भव्य अभियान चलाया जाता है और न ही किसी सेलिब्रिटी का समर्थन मिलता है. पिछले 12 वर्षों में, शैक्षिक योग्यता के आधार पर 764 छात्रों का चयन प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय कॉलेजों में प्रवेश के लिए किया गया है. राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति योजना कई मायनों में इसलिए अलग है क्योंकि यह प्रत्येक छात्र को विशेष सहायता प्रदान करती है. किसी एक छात्र को, जो किसी अग्रणी वैश्विक विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहा हो, ट्यूशन फीस, रहने का खर्च, हवाई किराया, बीमा और पाठ्यक्रम की अवधि के दौरान अन्य शैक्षिक खर्चों को कवर करने वाली कुल वित्तीय सहायता अक्सर 1 करोड़ रुपये से अधिक होती है और कभी-कभी 2 करोड़ रुपये तक भी पहुंच सकती है.

वह अनुसूचित जाति के उन सैकड़ों छात्रों में से एक हैं, जिनका जीवन राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति के कारण पूरी तरह बदल गया है. यह भारत सरकार की एक पहल है जो शीर्ष विदेशी विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर और डॉक्टरेट की पढ़ाई के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करती है. इस योजना में ट्यूशन, यात्रा, रहने-खाने का खर्च और अन्य शैक्षणिक आवश्यकताएं शामिल हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि विश्वस्तरीय विश्वविद्यालय में प्रवेश किसी छात्र के परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर न हो.

ऐसी सैकड़ों कहानियां हैं जहां परिवारों ने पहली बार पासपोर्ट देखा है और ऐसे कई उदाहरण हैं जहां माता-पिता अपने बच्चों को दूर देशों में भेजते हैं जबकि उन्होंने खुद देश के भीतर कॉलेजों में कदम तक नहीं रखा है.

2014 से, योजना ने उन परिवारों के छात्रों को सहायता प्रदान की है जिनकी वार्षिक आय 8 लाख रुपये से कम है, और उन्हें ब्रिटेन से लेकर जर्मनी, अमरीका से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक 21 देशों के विश्वविद्यालयों में प्रवेश दिलाया है. ऐसे कई परिवारों के लिए, विदेशी विश्वविद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन करना भी पास के किसी साइबर कैफे में जाने की आवश्यकता होती थी.

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. वैतिलिंगम राजेंद्रन ने संयुक्त राज्य अमरीका के ओक्लाहोमा स्टेट यूनिवर्सिटी से रसायन विज्ञान में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की. उनका पालन-पोषण दिहाड़ी मजदूर माता-पिता के बेटे के रूप में हुआ. उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा और स्नातक की पढ़ाई पास के सरकारी संस्थानों से पूरी की और उच्च शिक्षा प्राप्त करने के दौरान आर्थिक कठिनाइयों का सामना किया. फिर भी, दृढ़ संकल्प और अथक प्रयासों से उन्होंने सफलतापूर्वक डॉक्टरेट की पढ़ाई पूरी की और एक विशिष्ट वैज्ञानिक जैसा करियर बनाया.

ये छात्र अपने साथ केवल डिग्री या अच्छे वेतन वाली नौकरी ही नहीं लाते, बल्कि अपने समुदाय के लोगों के लिए आशाएं, अनगिनत अवसर और आकांक्षाएं भी लेकर आते हैं. राष्ट्रीय प्रवासी छात्रवृत्ति जैसी छात्रवृत्तियों को अक्सर महज वित्तीय सहायता कार्यक्रमों के रूप में देखा जाता है. वास्तव में, ये मानव पूंजी और ज्ञान सृजन में दीर्घकालिक निवेश हैं. विकसित देश केवल सड़कों, पुलों या हवाई अड्डों से ही नहीं बनते. वे कक्षाओं में भी बनते हैं. ऐसी छात्रवृत्तियों के साथ सीमा पार करने वाला प्रत्येक छात्र भारत के 2047 के विकसित भारत के सपने में योगदान देने का आत्मविश्वास और क्षमता लेकर लौटता है. यही एक छात्रवृत्ति का कंपाउंडिंग रिटर्न है.

छात्रवृत्ति का महत्व केवल शिक्षा के लिए धन उपलब्ध कराने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उन छात्रों के लिए स्थायित्व का एक ऐसा वातावरण तैयार करने में भी है जो अक्सर पहली बार शैक्षिक और सामाजिक दुनिया में कदम रख रहे होते हैं.

(लेखक भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता विभाग के सचिव हैं. व्यक्त विचार व्यक्तिगत हैं)

विंध्य की डायरी

कांग्रेस के उपवास में भी नजर आई गुटबाजी

डॉ. रवि तिवारी

कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान और प्रशिक्षण शिविर से एक उम्मीद जगी थी कि कांग्रेस अब अपना खोया सम्मान वापस लाकर रहेगी. साथ ही आगामी चुनावों में कांग्रेस विजय ध्वज फहरा सकेगी पर जो तस्वीर सामने है उससे नही लगता कि गुटबाजी और छत्रपों की राजनीति से पार्टी बाहर निकल पाएगी. हाल ही में राज्यसभा प्रत्याशी मीनाक्षी नटराजन का नामांकन निरस्त हुआ जिसके विरोध में कांग्रेस आक्रामक हो गई और आर-पार की लड़ाई शुरू कर दी. प्रदेश भर में विरोध प्रदर्शन और उपवास कार्यक्रम रखे गये लोकतंत्र को बचाने के लिये. इस उपवास में भी कांग्रेसी एक नही हो पाए. समूचे विंध्य में आपसी गुटबाजी देखने को मिली, कई जिम्मेदार नेता उपवास में नजर नही आए. दूसरे शब्दों में यह कहें कि खुद को अलग रखा. कई ऐसे प्रमुख चेहरे थे जो धरना उपवास में शामिल नही हुए. किसी ने कहा कि शहर से बाहर है लेकिन कई चेहरे ऐसे थे जो शहर में होने के बावजूद उपवास धरने में नही पहुंचे. इससे साफ है कि कांग्रेस की गुटबाजी अभी भी अपने स्थान पर है और छत्रपों के इर्दगिर्द ही राजनीति की धुरी घूम रही है. ऐसे हालात में क्या कांग्रेस फिर से विंध्य को अपना गढ़ बना पाएगी? संगठनात्मक ढ़ांचा पहले से ही बेहद कमजोर है और गुटबाजी अंदर ही अंदर पार्टी को दीमक की तरह खोखला कर रही है.

आखिर कौन हैं बड़े साहब

सरकारी अफसरों और विशिष्ट अतिथियों के ठहरने के लिये बनाए गये नवीन सर्किट हाउस की व्यवस्थाओं और उपयोग को लेकर एक बार फिर सवाल खड़े होने लगे है. नियमों और प्रोटोकाल की अनदेखी हो रही है. पुराने सर्किट हाउस में बाबा कांड ने सभी को हिला कर रख दिया था. कहावत है कि दूध की जली बिल्ली छाछ भी फूंक-फूंक कर पीती है पर ऐसा प्रतीत होता है कि जिम्मेदार तंत्र ने अतीत की घटनाओं से कोई सबक नही लिया है. कभी भी किसी के लिये सर्किट हाउस के दरवाजे खोल दिये जाते है. इस समय यहां बीमा कम्पनी से जुड़े एक व्यक्ति के भोपाल से आकर ठहरने की चर्चा है. रीवा आने पर सर्किट हाउस में ठहरने का इंतजाम कराया जाता है. चर्चा है कि एक बड़े अफसर की सिफारिश पर इन साहब को सर्किट हाउस में कोई न कोई रूम आवंटित हो जाता है. आखिरकार कौन है बड़े साहब? जिनके लिये नियम दरकिनार कर दिया जाता है. प्रशासनिक गलियारे में इस समय खूब चर्चा है. बड़े साहब कौन है जिनकी सिफारिश पर कमरा मिलता है ? यह जांच का विषय है.

सत्ता-संगठन में तालमेल नहीं

इस समय प्रदेश भर में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिये स्थानान्तरण का द्वार खोल दिया गया है. मनचाहे स्थान पर पदस्थापना पाने के लिये हर कोई प्रयासरत है और सत्ता-संगठन की गणेश परिक्रमा करने में लगा है. दरअसल स्थानान्तरण को लेकर सत्ता और संगठन के बीच तालमेल नही बन पा रहा है, जिसके कारण सूचियां लटकी हुई है . तीन साल से एक ही थाने में जमे प्रभारियों को बाहर का रास्ता दिखाया जाएगा, ऐसा आदेश प्रदेश पुलिस के मुखिया ने जारी किया था. मजे की बात तो यह है कि एक ही थाने और अनुभाग में पिछले कई वर्षो से थाना प्रभारी जमे हुए है. जैसे ऊर्जाधानी के मोरवा, बैढन कोतवाली, चितरंगी, जियावन के अलावा विंध्य के अन्य जिलों में एक ही थाने पर और एक ही जिले में दस वर्ष से अधिक समय से पुलिसकर्मी ड़टे हैं, मजाल है कि उन्हे हटा दिया जाय. हर कोई अपनी सेटिंग करके बैठा है. तो क्या यह माना जाय कि डीजी साहब का आदेश केवल कागजों तक सीमित है, आखिर अमली जामा कब पहनाया जाएगा.

विकास दर पर विश्व बैंक का अनुकूल रुख

भारत की विकास दर को लेकर विश्व बैंक ने अनुकूल रुख दर्शाया है. उसने भविष्यवाणी की है कि वित्त वर्ष 2027 में भारतीय अर्थव्यवस्था का ग्रोथ रेट 6.6 प्रतिशत रहेगा और 2028 में यह दर 7.2 फीसदी तक पहुंच जाएगी. अपनी ग्लोबल इकोनॉमिक प्रास्पेक्ट रिपोर्ट में विश्व बैंक ने कहा कि पश्चिम एशिया में युद्ध से व्याप्त अनिश्चितता के बावजूद भारत में आर्थिक गतिविधियां मजबूत बनी रहीं. ग्रामीण क्षेत्रों में निजी उपभोग अच्छा बना हुआ है. शहरों में भी मांग में सुधार देखा जा रहा है. घरेलू बिक्री से टैक्स संग्रह में वृद्धि हुई है. ईंधन पर कर घटाया गया है. ऊर्जा लागत बढ़ने तथा उर्वरक की कमी से निपटने के उपाय किए गए हैं. विश्व बैंक का अनुमान है कि अमेरिका के टैरिफ घटाने और दोनों देशों के बीच व्यापार समझौता हो जाने पर हालत में सुधार होगा. अगले 2 वर्षों में भारत का निर्यात बढ़ेगा और घरेलू मांग भी मजबूत होगी. सब्सिडी बढ़ाने से वित्तीय घाटा बढ़ सकता है. विश्व बैंक की राय है कि भारत में ढांचागत सुधार से व्यवसाय के लिए उपयुक्त वातावरण बनेगा तथा वहां प्रत्यक्ष विदेशी पूंजीनिवेश का दौर लौटेगा. वस्तु एवं सेवा कर में कटौती से उपभोक्ताओं की मांग बढ़ेगी. गैरजरूरी व्यय में कमी लाकर अर्थव्यवस्था को मजबूती दी जा सकती है. विश्व बैंक ने वैश्विक विकास दर पर नकारात्मक भविष्यवाणी करते हुए उसके 2026 में 2.5 प्रतिशत पर रहने का अनुमान पेश किया. यह स्थिति पश्चिम एशिया संकट की वजह से रहेगी. यदि ऊर्जा आपूर्ति में रुकावटें आती रहीं तो वैश्विक विकास दर धीमी होकर 1.3 प्रतिशत पर भी आ सकती है. इस दौरान वित्तमंत्री निर्मला सीतारमन ने कहा है कि विकासशील देशों को आर्थिक समस्याओं से निपटने में आपसी सहयोग करना होगा तभी समावेशी विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा.

विश्व बैंक का अनुमान है कि अमेरिका के टैरिफ घटाने और दोनों देशों के बीच व्यापार समझौता हो जाने पर हालत में सुधार होगा. अगले 2 वर्षों में भारत का निर्यात बढ़ेगा और घरेलू मांग भी मजबूत होगी. सब्सिडी बढ़ाने से वित्तीय घाटा बढ़ सकता है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

नेहरू और मोदी में क्यों तुलना, क्या जरूरी है कार्यकाल गिनना

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू अपने निधन के 62 वर्ष बाद भी बीजेपी को याद आ रहे हैं. ऐसा लग रहा है मानो नेहरू की आत्मा कह रही है- तुम मुझे यूं भुला न पाओगे! यह तथ्य इस बात से सिद्ध होता है कि बीजेपी नेताओं ने जोर-शोर से दावा किया कि नरेंद्र मोदी ने लगातार प्रधानमंत्री पद पर रहने का नेहरू का रिकार्ड तोड़ दिया. इसे वह बहुत बड़ी उपलब्धि बता रहे हैं जबकि यह आधा सच है. नेहरू 15 अगस्त 1947 से लेकर 27 मई 1964 तक लगभग 17 वर्ष लगातार देश के लोकप्रिय पीएम रहे.'

हमने कहा, 'आप समझ नहीं रहे हैं. बीजेपी ने 1947 से 1952 तक का नेहरू का कार्यकाल रिजेक्ट कर दिया क्योंकि प्रथम लोकसभा चुनाव 1951-52 में हुए और फिर कांग्रेस पार्टी ने नेहरू को विधिवत प्रधानमंत्री चुना. बीजेपी का आर्गुमेंट बड़ा सॉलिड है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, यदि 1947 से 1952 की नेहरू सरकार को बीजेपी वैध न मानते हुए खारिज करती है तो उस सरकार के मंत्रियों को भी वह अवैध मानेगी. नेहरू की उस सरकार में सरदार पटेल गृहमंत्री, मौलाना आजाद शिक्षा मंत्री, सरदार बलदेव सिंह रक्षा मंत्री, राजकुमारी अमृत कौर स्वास्थ्य मंत्री और डा. बाबासाहेब आंबेडकर विधि या कानून मंत्री थे. नेहरू की उस गवर्नमेंट में तो डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी भी शामिल थे जिन्होंने आगे चलकर 1951 में जनसंघ की स्थापना की थी. यही जनसंघ आज की बीजेपी है. क्या इन सारी हस्तियों को बीजेपी नकार सकती है?'

हमने कहा, 'बीजेपी का कहना है कि सरदार पटेल को देश की 22 कांग्रेस कमेटियों का समर्थन था लेकिन महात्मा गांधी ने पक्षपात करके सरदार पटेल की बजाय नेहरू को प्रधानमंत्री बना दिया. तब भारत अंग्रेजों का उपनिवेश था और वह अंतरिम सरकार थी. चुनाव के बाद सार्वभौम भारतीय गणतंत्र की सही सरकार बनी.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हुज्जत करके क्या फायदा! नेहरू अपनी जगह थे और मोदी अपनी जगह! तुलना हो भी नहीं सकती. नेहरू की पढ़ाई इंग्लैंड के हैरो स्कूल और कैम्ब्रज यूनिवर्सिटी में हुई. वह बैरिस्टर बनकर भारत लौटे. मोदी के संस्कारों की शिक्षा-दीक्षा आरएसएस की शाखा में हुई. नेहरू ने स्टोरी आफ माय लाइफ और डिस्कवरी ऑफ इंडिया लिखी. वह चिंतक और विचारक थे जबकि मोदी संघ के प्रचारक रहे. नेहरू को गुलाब का फूल पसंद था तो मोदी को कमल पसंद है. नेहरू भारतीय लोकतंत्र के शिल्पकार थे. बीजेपी को 2014 में कांग्रेस की पकी पकाई खीर मिल गई. नेहरू इतिहास हैं जबकि मोदी वर्तमान ! दोनों का है अपना योगदान. इसलिए तुलना की जरूरत नहीं!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12288
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2	3	4		■	5	6
7				■	8		
	■	9		10	■	■	
■	11		■		■	12	
13			■	14	15		■
16		■	17				18
19		20	■	21		■	
	■	22		■	23		

ऊपर से नीचे
1. सिंह, अफ्रीका में पाया जाने वाला शेर 2. दलनी (सं.) 3. उत्तम आचरण, अच्छा चाल-चलन 4. (फसल) काटना 5. एक चिकना कोमल पदार्थ जिससे मधुमक्खियों का छत्ता बना होता है 6. शब्दों का ठीक प्रकार से उच्चारण न करने के कारण रुक-रुक कर बोलना 10. जौहरी 11. नूतनता, नयापन 12. बड़ी टोकरी 13. राजा, सृष्टिकर्ता 15. चक्कर खाना, चकित होना या करना 18. रगड़ने की क्रिया या भाव, अत्यधिक परिश्रम करना 20. कौआ, बोतल-शीशी आदि की डाट

बाएं से दाएं
1. दुर्व्यवहार, बुरा बर्ताव 5. सांसारिक वस्तुओं को सब कुछ समझना, प्रेम, ममता 7. कुर्बानी (सं.) 8. प्रकाश, आभा, क्रांति 9. कश्मीर में उगने वाला एक लंबा वृक्ष जो देखने में बड़ा सुंदर होता है 11. पुरुष जाति का 12. तंत्र-मंत्र का प्रयोग, जादू 13. किसी कार्य में विशेष रूप से निपुण, कुशल 14. पचाने अथवा पकाने वाला 16. प्राण, ज्ञान, जीवन 17. स्थिर, कायम 19. झंडा, ध्वज 21. ककड़ी 22. पहरा, भ्रमण, घूमना 23. नाक का एक रोग

Solution 12287

प्र	ति	ज्ञा	प	त्र	■	आ	ब
हा	ल	त	■	■	अ	ज्ञा	त
रि	■	व्य	व	धा	न	■	र
त	र	■	स	क	ल	■	स
■	क्त	■	न	■	■	सु	■
शा	पि	त	■	श	मा	दा	न
■	पा	क	क	ला	■	मा	ह
ह	सु	ली	■	का	ला	■	ला

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में धार्मिक कार्यो में रूचि बढेंगी, यात्रा में बैचारिक वाद विवाद होगा, वर्ष के मध्य में मित्रों तथा प्रियजनों भाईयों का सहयोग, अचल संपत्ति के कार्यो में सफलता मिलेगी, दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी, कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा, वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्याओं में व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों और मित्रों का कार्यो में सहयोग बना रहेगा, अचल संपत्ति से लाभ होगा, दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को यात्रा में सावधानी रखकर कार्य करना हितकर रहेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट रह सकता है, सिंह राशि के व्यक्तियों को सफलता मिलेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को अच्छा स्थान पद प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को कार्यक्षेत्र में परिश्रम बढेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक मिलनसार होगा, नेतृत्व करने का गुण रहेगा, किसी खास तरह की उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा, विशेषज्ञ होगा, आय के साधन अधिक होंगे, धार्मिक विचारधारा का सामाजिक होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

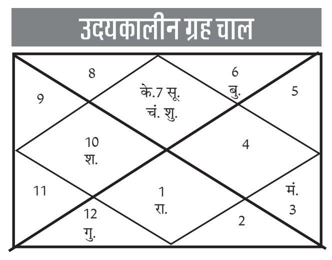

पंचांग

रा.मि. 25 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या चन्द्रवासरे दिन 8/45, मृगशिरा नक्षत्रे रात 8/45, शूल योगे दिन 10/16, नाग करणे सू.उ. 5/13, सू.अ. 6/47, चन्द्रचार वृषभ दिन 9/36 से मिथुन, पर्व- स्नानदान अमावस्या, सोमवती अमावस्या, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मृगशिरा नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड सरसों, अलसी, सींगदाना, पिपरमेंट, में तेजी की चाल चलेगी, ज्वार, बाजरा आदि में नरमी का रूख रहेगा, भाग्यांक 1973 है.

मेष- अपूर्ण समाचारों पर लिये गये फैसले हानिकारक रहेंगे, सुख सुविधाओं पर खर्च होगा, नये लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेगा, अतिथि आगमन होगा.

वृषभ- पुराना रूका पैसा मिलने की उम्मीद है, रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यो में सफलता मिलेगी, दिनचर्या व्यवस्थित रहेगी.

मिथुन- व्यापारिक साझेदारी लाभकारी हो सकती है, नए संपर्क भाग्योदय में सहायक रहेंगे, नियोजित कार्यो में सफलता मिलेगी, अतिथि आगमन हो सकता है.

कर्क- अपनों की मदद करने से प्रसन्नता होगी, जीवनसाथी की भावना का सम्मान करें, नवीन कार्यो में खर्च होगा, आभूषण की प्राप्ति होगी, आमदानी के जरिये बढ़ेंगे.

सिंह- तय कार्यक्रम में बदलाव से खिन्नता होगी, अधिकारियों से संपर्को का लाभ होगा, पारिवारिक कार्यो में सुख शांति मिलेगी, कार्य जल्दबाजी में न करें.

कन्या- अधूरे कार्य सहज में पूरे होंगे, उच्च अध्ययन पर विचार होगा, जमीन जायजाद कोर्ट कचहरी के कार्यो का निराकरण होगा, पारिवारिक सामंजस्य बना रहेगा.

तुला- आयात निर्यात के कार्यो में बड़े लाभ की संभावना है, तनाव दूर होगा, अधिकारियों का सहयोग बना रहेगा, स्वास्थ्य में सुधार होगा.

वृश्चिक- सामाजिक कार्यो में भागीदारी बनेगी, दौड़धूप से निजी कार्य पूरे होंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यो में व्यस्तता रहेगी, आपसी सहयोग रहेगा.

धनु- शादी विवाह की चर्चाएं आगे बढेंगी, कानूनी मामलों में पक्ष मजबूत होगा, व्यापार व्यवसाय की समस्या दूर होगी, गुप्त शत्रुओं से सतर्क रहें.

मकर- धर्म कर्म में आस्था बढेगी, राजकीय मामले पक्ष में सुलझेंगे, निकटस्थ लोगों से कुछ मदद प्राप्त होगी, महत्वपूर्ण कार्यो में सावधानी रखें.

कुम्भ- अनुभवी लोगों की मदद से राह आसान होगी, भावनात्मक संबंधों का गतिरोध दूर होगा, शुभ समाचार मिलेंगे, पुराना कार्य बनेगा, सत्संग में रूचि बढेगी.

मीन- आय के स्त्रोत बढेंगे, धार्मिक कार्यक्रमों में खर्च की संभावना है, राजनैतिक क्षेत्र में प्रयास करने से सफलता प्राप्त होगी, उच्चाधिकारियों का सहयोग मिलेगा.

SUDOKU 7420

3	9				1			
5	4			6	8		1	3
		1		7		9	5	
	8	9		5	3		4	7
6	1		4	9		2	3	
	3	4		1		8		
7	5		8	3			2	4
			6				7	9

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7419

9	6	2	3	4	1	7	5	8
1	4	8	9	7	5	6	2	3
5	7	3	2	6	8	1	4	9
3	2	1	6	9	4	8	7	5
4	8	7	5	1	2	9	3	6
6	9	5	8	3	7	4	1	2
8	3	4	7	2	6	5	9	1
2	1	6	4	5	9	3	8	7
7	5	9	1	8	3	2	6	4